International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(1): 128-135
www.educationjournal.info
Received: 11-01-2022
Accepted: 16-02-2022

डॉ. मीनाक्षी
सहायक आचार्य,
श्रीमती कमला देवी गौरीदत्त मित्तल कन्या महाविद्यालय,
सरदारशहर, चूरू, राजस्थान,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. मीनाक्षी
सहायक आचार्य,
श्रीमती कमला देवी गौरीदत्त मित्तल कन्या महाविद्यालय,
सरदारशहर, चूरू, राजस्थान,
भारत

सेवापूर्व व सेवारत शिक्षक वर्ग की चुनौतियां एवं उनके व्यावसायिक सुझाव

डॉ. मीनाक्षी

DOI: https://doi.org/10.22271/27891607.2022.v2.i1b.52

सारांश
वर्तमान युग परिवर्तन का युग हैं, वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व जहा कोरोना महामारी से जूझ रहा था ठीक उसी समय शैक्षिक व्यवस्था चरमरा गयी थी। जिसके परिणाम स्वरुप जो सबसे ज़्यादा प्रभावित हुए थे उनमें मज़दूर वर्ग व् शिक्षक वर्ग पर इसका प्रभाव सबसे ज्यादा दिखा था। वैसे भी इक्कसवीं सदी में शिक्षा की चुनोतियाँ बदल रही हैं और इससे शिक्षक की भूमिका भी बदलती जा रही है। जब शिक्षा की चुनोतियाँ एवं शिक्षक से अपेक्षाएं बदल रही हैं तो शिक्षक की जिम्मेदारियाँ, गुण, अपेक्षित क्षमताएं व कौशलों पर भी विचार करना जरुरी हो जाता है। इस शोध पत्र में शिक्षक शिक्षा के लिए अभी तक किये गए प्रयासों की व्याख्या की गयी है और शिक्षक की वर्तमान पेशेवर जरूरतों एवं चुनोतियों को लिखा गया है। शोध पत्र के इस प्रस्तुतीकरण में सन्दर्भ नयी शिक्षा नीति 2020, संवैधानिक मूल्यों और कोविड19 के बाद की परिस्थियों में शिक्षक की भूमिका और शिक्षक से अपेक्षाओं को गया है, जिसके अंतर्गत नयी शिक्षा नीति और कोविड-2019 के बाद की बदलती परिस्थितियों के मद्देनजर शिक्षक की पेशेवर जरूरतों और चुनौतियों को समझते हुए शिक्षक विकास के समग्र उपागम को अपनाने की बात की गयी है।

कूटशब्द: सेवा पूर्व शिक्षक, सेवारत शिक्षक, नयी शिक्षा नीति 2020, व्यवहारवाद, संरचनावाद, संज्ञानवाद, उच्च शिक्षण संस्थान, शिक्षक पेशेवर विकास

1. प्रस्तावना

1.1 शिक्षक शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान पेशेवर जरूरतें व चुनौतियाँ: राष्ट्र व राज्य - राजस्थान के संदर्भ में)

भारत में शिक्षक शिक्षा व्यवस्था 19वी सदी मे इंग्लैंड व यूरोप मे स्थापित आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना से जुड़ी हुई हैं। भारत में पहला औपचारिक शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल केरी, मार्शमैन और वार्ड द्वारा बंगाल के सेरामपुर में ' सामान्य स्कूल' नाम से 1793 में स्थापित किया गया था। भारत में शिक्षक शिक्षा की विधिवत शुरुआत 1925 से मानी जाती है जब गीजुभाई ने अपने बाल मनोवैज्ञानिक विचारों को मूर्त रूप देने के लिए दक्षिण मूर्ती अध्यापक मंदिर की स्थापना की। 1940 के दशक में विद्या भवन संस्थान ने राजस्थान में शिक्षक शिक्षा की शुरुआत की। देश की आजादी के बाद कोठारी आयोग (1964-1966) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए कई परिवर्तनों को शामिल किया।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत राजस्थान में शिक्षकों व अनुदेशकों के लिए संदर्भ संस्था के रूप में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) की स्थापना की गई,

जिसका एक मुख्य उद्देश्य सेवा पूर्व व सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था करना है। राजस्थान में सेवारत शिक्षकों को सतत प्रशिक्षण देने तथा समुदाय में शिक्षक की सकारात्मक छवि बनाने मे लोक जुंबिश जैसे कार्यक्रमों की भी महत्ती भूमिका रही है, जिसके तहत 'अध्यापिका मंच जैसे नवाचार किये गये। सेवारत शिक्षक शिक्षा के लिए क्रांतिकारी कार्य जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम एवं सर्व शिक्षा अभियान के दौरान देखने को मिली। सर्व शिक्षा अभियान के तहत राजस्थान में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों के आयोजन के लिए एक समृद्ध अकादमिक संसाधन केंद्र के रूप मे खंड संदर्भ केंद्र (Block Resource Centres) व संकुल संदर्भ केंद्र (Cluster Resource Centres) की स्थापना की गई। वर्ष 2008 में राजस्थान में कुल 248 BRCs व 3074 CRCs संचालित थे।(Report on Role of block and cluster resource centres in providing academic support to elementary schools) साथ ही NCF 2005 में भी सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण को शिक्षकों के लिए प्रासंगिक तथा प्रायोगिक बनाए जाने की बात की गयी है। इस प्रकार ऐसे कई ऐतिहासिक प्रयासों से हम एक ऐसे शिक्षक शिक्षा प्रणाली को देख पा रहे हैं जिसमें शिक्षकों के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक पक्षों पर भी उचित ध्यान दिया जा सके।

वर्तमान समाज की त्वरित बदलती परिस्थितियों,ज्ञान के प्रति हमारे बदलते दृष्टिकोण के साथ- साथ शिक्षा के प्रति हमारे दृष्टिकोण एवं शिक्षकों की भूमिका और उनसे अपेक्षाओं में भी काफी परिवर्तन आया है। राष्ट्र व राज्य की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए सभी के लिए सुलभ पहुँच में गुणवत्ता युक्त शिक्षा लाने के लिए शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।इन बदलती स्थितियों में शिक्षकों की पेशेवर जरूरतों तथा चुनौतियों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो गया है। NEP 2020 भी यह स्पष्ट कर चुकी है - 'अध्यापक-शिक्षा की गुणवत्ता,भर्ती, पदस्थापना, सेवा शर्तें और शिक्षकों के अधिकारों की व्यवस्था वैसी नहीं है, जैसी होनी चाहिए और इसके परिणाम स्वरूप शिक्षकों की गुणवत्ता और उत्साह वांछित मानकों को प्राप्त नहीं कर पाता है।

UDISE 2019-20 के प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि राजस्थान में न सिर्फ शिक्षकों की कमी है, अपितु महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षाकृत कम संख्या विचारणीय है। (कुल पुरुष शिक्षक 264040, कुल महिला शिक्षिकायें131107 – UDISE 2019-20)। राजस्थान में शिक्षकों की अपर्याप्तता के लिए शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में होने वाली देरी तथा शिक्षक भर्ती हेतु स्पष्ट, समयबद्ध नीति के अभाव को एक सामान्य कारण माना जा सकता है। हालाँकि गुणवत्ता युक्त शिक्षकों की भर्ती हेतु NEP 2020 "शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) सामग्री और शिक्षाशास्त्र दोनों के संदर्भ में बेहतर परीक्षण सामग्री को विकसित करने की बात करती है,परंतु सशक्त शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक शिक्षा (सेवा पूर्व प्रशिक्षण, सेवारत प्रशिक्षण) की व्यवस्था के पुनरीक्षण की आवश्यकता है।

राजस्थान में शिक्षक भर्ती तथा सेवा पूर्व प्रशिक्षण में योग्यता एवं रुचि रखने वालों के प्रवेश को सुनिश्चित करने वाली व्यवस्था की जरूरत है। इस हेतु NEP 2020 एक उत्कृष्ट 4 वर्षीय एकीकृत बीएड. कार्यक्रम तथा शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) को सभी स्तर के शिक्षक भर्ती के लिए विस्तृत करने की बात करती है। सेवा पूर्व प्रशिक्षणों के लिए उच्च गुणवत्ता युक्त, सभी संसाधनों युक्त उच्च स्तरीय संस्थाओं की आवश्यकता है ताकि हम शिक्षा के क्षेत्र में रुचि रखने वाले प्रतिभावान छात्रों को विकास के श्रेष्ठ अवसर प्रदान कर सकें। इसके साथ ही राज्य में सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षणों के शैक्षिक संस्थानों (निजी और सरकारी) को सुदृढ़ करने के लिए उनपर एक नियामक संस्था की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। शिक्षण अनुभव के व्यवहारिक पक्ष को प्रभावी बनाने के लिए सेवा पूर्व चलाए जा रहे इंटर्नशिप के कार्यक्रम को अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। सेवा पूर्व व सेवारत शिक्षक प्रशिक्षकों की चयन प्रक्रिया व व्यवसायिक विकास के ढांचे मे परिवर्तन की आवश्यकता है।

शिक्षकों व शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए NEP 2020 में प्रस्तावित सतत व्यावसायिक विकास और पेशेवर प्रबंधन (करियर मैनेजमेंट) और प्रगति के अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। राज्य में शिक्षकों के लिए एक सकारात्मक, प्रोत्साहित करने वाली कार्य संस्कृति तथा उच्च गुणवत्ता वाले, संसाधन युक्त कार्यस्थल विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही विश्व की बदलती परिस्थितियों में शिक्षकों द्वारा शैक्षिक प्रौद्योगिकी का संतुलित व प्रासंगिक प्रयोग प्रोत्साहित किया जाना वर्तमान की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा से जुड़े हर स्तर के सभी हितधारकों के लिए आकलन की नई तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है।

अनेक नीतियों, उनके क्रियान्वयन व अन्य प्रयासों के बाद भी वर्तमान में राज्य की शिक्षा व्यवस्था के सामने कई चुनौतियां हैं, जिनमें शिक्षक भर्तियों में होने वाली अनावश्यक देरी, शिक्षक शिक्षा के उच्च गुणवत्ता युक्त सरकारी संस्थाओं की अपर्याप्तता, शिक्षक प्रशिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए प्रोत्साहन की अपर्याप्तता, शिक्षकों पर गैर शैक्षणिक कार्यों का भार, शिक्षकों के लिए सतत मार्गदर्शन (मॉनिटरिंग) व परामर्श

(काउन्सलिंग) का अभाव, विभिन्न स्तरों पर सुलभ संसाधनों की कमी प्रमुख है।

2. वर्तमान चुनौतियां एवं अपेक्षाएं

a. वर्तमान महामारी एवं आपातकालीन परिस्थितियों के कारण बच्चों की सीखने में हानि हुयी है,जिसकी पूर्ति के लिए अपेक्षा है कि कोई समानांतर शिक्षण व्यवस्था हो।
b. विद्यालयों से दूरी के कारण बच्चे भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से कमजोर हुए हैं, इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों को सामाजिक, भावनात्मक पक्ष पर संबल प्रदान करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए।
c. यह महसूस किया गया कि आपातकालीन परिस्थितियों में शिक्षण हेतु हमारा बुनियादी ढांचा कमजोर था। इसे मजबूत कर शिक्षा की पहुँच दूर-दराज के प्रत्येक बच्चे तक पहुंचाना।
d. शिक्षकों को आपातकालीन परिस्थितियों में प्रभावी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित करना एवं संबल प्रदान करना।

3. वर्तमान संदर्भ में सेवा पूर्व एवं सेवारत शिक्षक शिक्षा

सीखने के सिद्धांतों की बात करें तो सीखने की प्रक्रिया में व्यवहारवाद, संज्ञानात्मक वाद और रचनावाद प्रमुखता से उभरकर आते हैं। व्यवहारवाद में कुछ ख़ुलापन देने के बाद एक वांछित प्रतिक्रिया की अपेक्षा होती है। संज्ञानात्मकवाद सिद्धांत में ज्ञान और आंतरिक मानसिक संरचनाओं के अधिग्रहण पर जोर दिया जाता है। इसमें शिक्षार्थी की अधिगम प्रक्रिया की अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है और कैसे जानकारी प्राप्त की गयी, कैसे व्यवस्थित की गयी,संग्रहीत और पुन:याद की गयी जैसे मुद्दों को संबोधित किया जाता है। इसमें ज्ञान को सार्थक बनाने पर जोर दिया जाता है और नयी जानकारी को पहले से निर्मित ज्ञान के साथ व्यवस्थित और जोड़ने में शिक्षार्थी की मदद की जाती है। रचनावाद: जैसे-जैसे हम व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक से रचनावाद की तरफ आते हैं तो निर्देश का केंद्र अध्यापन से हटकर सीखना, निष्क्रिय तथ्यों और नियमित गतिविधियों के हस्तांतरण से हटकर समस्या समाधान के लिए विचारों को सक्रिय रूप से क्रियान्वित करने पर होता है। इसमें अधिगमकर्ता ज्ञाननिर्माण की सामाजिक प्रक्रिया में शामिल रहता है। शिक्षक व्यस्क होते हैं इसलिए यहाँ व्यस्क अधिगम सिधान्तों कोध्यान में रखना जरुरी है और उसी अनुसार शिक्षक अधिगम के लिए आवश्यक वातावरण का निर्माण करना महत्वपूर्ण हो जाता है। ये इस प्रकार हो सकते हैं-

1. **सीखने के लिए तैयार कर पाना:** यह अधिगम प्रक्रिया में शामिल होने के लिहाज से आवश्यक प्रक्रिया है। यह समझना जरूरी है कि शिक्षक की जरूरत क्या है, वह किन चुनौतियों का सामना कर रहा है और उसे किन कौशलों पर काम करने की जरूरत है। यह शिक्षक विकास आवश्यकता आकलन (Teacher development need assessment) द्वारा पता किया जा सकता है।
2. **अधिगम अनुभव:** शिक्षक के अर्जित अनुभवों के साथ अधिगम प्रक्रिया से जुड़े हुए हो और वह इस पर आगे के स्तर के लिए निर्मित होनी चाहिए। अधिगम अनुभव के निर्माण के समय शिक्षक के परिवेश, उसकी शब्दावली को शामिल करना आवश्यक है अन्यथा एक अलग-थलग अधिगम अनुभव के प्रति शिक्षकों का रुझान कम हो सकता है।
3. **स्वायत्ता:** शिक्षक को आगे बढ़ने और विकास करने के लिए एक उचित वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे अपने अधिगम के बारे में खुद निर्णय लेना पसंद करते हैं। यह स्वायता समय निर्धारण, अधिगम सामग्री के रूप और अधिगम के तरीकों से सम्बन्धित हो सकती है। शिक्षकों को अपनी क्षमता वर्धन के लिए सीखने के अलग-अलग तरीके चुनने का विकल्प मिले जैसे कुछ शिक्षक किसी एक स्थान पर एक समूह के साथ सुगम कर्ताओं के द्वारा किये गए सत्रों से सीखने में रूचि रखते होंगे तो कुछ ऑनलाइन कोर्स करने को प्राथमिकता देंगे तो कुछ अपने स्थानीय शिक्षक साथियों के साथ पेशेवर सीख समुदाय के माध्यम से सीखना चाहेंगे।
4. **दैनिक जीवन में उपयोगिता:** शिक्षक चाहेंगे कि जो अधिगम अनुभव मिल रहे हैं, वे उनके दैनिक शैक्षिक क्रियाकलापों को बेहतर करने में मदद कर पाएँ और उनके कौशलों का विकास हो।4. शिक्षक शिक्षा में काम के अब तक के अनुभव और शोध यह बताते हैं कि शिक्षक अपने और साथियों के अनुभवों से ज्यादा सीखते हैं। वर्तमान समय में शिक्षकों में ज्ञान के प्रति नजरिये में बदलाव की जरूरत है। एक व्यस्क के पास उसके अपने जीवन और परिवेश के बहुत सारे अनुभव होते हैं। अब तक वे अपने दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों को सुलझाने के लिए कई तरीकों को अपना चुके होते हैं। उनके अनुभवों को जब प्रशिक्षण/ कार्यशाला में शामिल किया जायेगा तो वे ज्ञान का सह निर्माण कर रहे होंगे। यह व्यवहारिक ज्ञान और अनुभव उन्हें अपनी कक्षा कक्ष शिक्षण के दौरान

आने वाली चुनौतियों के समाधान खोजने में सहायक होगा।

5. **शिक्षकों को अनुभवी शिक्षकों की मॉनिटरिंग और सीखने का माहौल मिले:** एक सहज और लोकतांत्रिक, वातावरण में शिक्षक ज्यादा बेहतर सीखते हैं। शिक्षकों के सीखने में समूह कार्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें ऐसे काम दिए जाएँ जिसमे एक दूसरे से संवाद करें तथा आपस में सहयोग करते हुए टीम भावना के महत्व को समझें। शिक्षकों के सीखने की प्रक्रियाओं को और इसके असर को बारीकी से आकलन करते हुए, एक व्यवस्थित क्रम में देखने की आवश्यकता है। सेवापूर्व से लेकर सेवारत तक एक शिक्षक की तैयारी और सीखने की प्रक्रियाओं की समीक्षा नए ढंग से किये जाने की आवश्यकता है।

4. सेवापूर्व व सेवारत शिक्षक शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था - चुनौतियां व सुझाव

4.1 चुनौतियां

शिक्षकों की तैयारी की प्रक्रिया में कुछ कमियां हैं,उन्हें पहचान कर बेहतर करने की आवश्यकता है। यह कमियां निम्न है-

- शिक्षकों की तैयारी में आपसी सहभागिता, सहयोग, चर्चा तथा विमर्श द्वारा आपस में सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना होगा।
- शिक्षा में आ रहे नए विचारों और तकनीकों को समझ कर बेहतर तरीके से उपयोग की समझ विकसित की जाए।
- शिक्षा में नैतिक मूल्यों को जोड़ने की ज़रुरत है। प्रशिक्षण में इस सम्बन्ध में वीडियो, कहानियां, आदि द्वारा समसामयिक मुद्दों पर चर्चा करने और समझ बनाने के अवसर दिए जाए।
- उपस्थिति सुनिश्चित की जाए तथा लगातार इस तरफ ध्यान दिया जाए। इसकी मॉनिटरिंग कर रही संस्थाओं को मजबूत बनाया जाए।
- यह सुनिश्चित किया जाए की वास्तविक छात्र अध्यापक कक्षाओं में उपस्थित रहे। बिना कालेज गए सिर्फ डिग्री प्राप्त कर लेने की प्रवृत्ति पर रोक लगाना होगा।
- इंटर्नशिप के दौरान बच्चों के साथ काम करने के पर्याप्त अवसर हों। साथ ही महाविद्यालय के प्राध्यापक और विद्यालय के शिक्षक की संयुक्त निगरानी हो।
- तकनीकी के प्रयोग हेतु (ICT) खुद को तैयार कर सकें। इसके लिए माहौल और सुविधाएं बनाई जाए।
- विविधता के प्रति संवेदनशील बनाना होगा।
- ऐसे मापदंड तैयार करने होंगे जहां शिक्षक शिक्षा के संस्थान और वहां अध्ययनरत छात्राध्यापकों के प्रदर्शनों का आकलन किया जाए। इस आकलन के लिए स्पष्ट सूचकों का निर्माण किया जाए।
- पाठ्यचर्या में विषय वस्तु और पेडागोजी के हिस्सों को वर्तमान संदर्भ में देखने की आवश्यकता है।

4.2 सुझाव

शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या - डिजाइन (विभिन्न स्तरों पर): शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम क्या हो, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम नयी जरूरतों को पूरा करने में शिक्षक को सक्षम बनाने वाला होना चाहिए। और ये नयी जरूरतें नयी शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समझाते हुए व्याख्यायित होनी चाहिए। यदि हम शिक्षक की क्षमताओं को कौशल, ज्ञान एवं अभिवृत्ति के रूप में देखें तो पाठ्यक्रम इस प्रकार होना चाहिए

शिक्षक की क्षमताओं को कौशल, ज्ञान एवं अभिवृत्ति के रूप

कौशल	ज्ञान	अभिवृति
• नेतृत्व • फेसिलिटेशन स्किल्स • कक्षा प्रबंधन • सूक्ष्म अवलोकन • समय प्रबंधन • तार्किकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण • विवेचनात्मक चिंतन • प्रभावी सम्प्रेषण • समस्या समाधान • शिक्षा तकनीकी व आईसीटी का इस्तेमाल • आकलन के आधार योजना निर्माण और क्रियान्वयन	• विषयवस्तु का ज्ञान • अलग अलग आयु वर्ग के अनुरूप बाल मनोविज्ञान की समझ। • विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि से परिचय • शिक्षा में हो रहे नवाचारों के प्रति अपडेट हो • स्थानीय संस्कृति का ज्ञान • शिक्षा तंत्र की जानकारी • शिक्षण विधियों और प्रविधियों की जानकारी • टेक्नोलॉजी की समझ	• लोकतान्त्रिक मूल्यों में आस्था • वैज्ञानिक तथा तार्किक चिंतन • सकारात्मक चिंतन और आशावादी • कार्य के प्रति रूचि • नई चीज़ें सीखने के प्रति रूचि • स्व आकलन और आत्म-अवलोकन • फीडबैक को सकारात्मक रूप से प्राप्त करना • परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना • भावनाओं को संभाल पाना व व्यक्त कर पाना

5. शिक्षक शिक्षा में शिक्षण विधियाँ व नवाचार

- शिक्षक शिक्षा में कहानी, बालगीत, नाटक, भाषण, प्रदर्शन, प्रोजेक्ट, समस्या समाधान आदि विधियों का उपयोग किया जाता रहा है। यह समझ विकसित करने की आवश्यकता है कि किस आयु वर्ग के बच्चों के साथ क्या किया जाना चाहिए। छोटे बच्चों के साथ कहानी और कविता का उपयोग किया जाना चाहिए। किशोर उम्र के बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य, समस्या समाधान आदि से जुड़े कार्य दिए जाए।
- स्थानीय संदर्भों और उपलब्ध संसाधनों का कक्षा कक्ष शिक्षण में उपयोग करने तथा बच्चों की आवश्यकता अनुसार नवाचार करने की समझ विकसित की जाए।
- देश दुनिया में ज्ञान के क्षेत्र में आ रही नई जानकारियों और नवाचारों से परिचित रहे तथा अपने संदर्भ में इसका उपयोग करें।
- महामारी व अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में बच्चों की शिक्षा के लिए समुदाय व अभिभावकों की भूमिका को प्रशिक्षण की विषयवस्तु में शामिल करना होगा।
- शिक्षा में तकनिकी के इस्तेमाल को सोच समझ कर बढ़ावा देना होगा। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को उपकरण और कौशल प्रदान करने होंगे। साथ ही शिक्षकों को तैयार करने की प्रक्रिया मे आनलाईन माध्यमों के उपयोग को बढ़ावा देना होगा।
- शिक्षक अपनी आवश्यकता के अनुसार नई डिजिटल सामग्री बना सकें तथा दूरस्थ शिक्षा में इसका उपयोग कर सकें।
- शिक्षकों को प्रशिक्षित करें कि वे डिजिटल संसाधनों, डिजिटल सामग्री के संभावित खतरों के प्रति भी सचेत रहे व यह सुनिश्चित करे कि डिजिटल व ऑनलाइन माध्यम कहीं सामाजिक व शैक्षिक गैर बराबरी को न बढ़ाए।
- शिक्षक उन बच्चों के लिए विशेष योजना बना कर काम पाए, जिनकी पहुँच ऑनलाइन संसाधनों तक नहीं है। इस तरह की सामग्री बनाना होगा जो बच्चों के सीखने में सहयोगी हो। वे अपने अभिभावकों और बड़ों की सहायता से भी सीखना ज़ारी रख सकें।
- शिक्षक टीवी,रेडियो और यूट्यूब जैसे माध्यमों के द्वारा शैक्षिक सामग्री को बच्चों तक पहुंच पाए।

6. सेवा पूर्व प्रशिक्षण

शिक्षकों को तैयार करने में सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा का बहुत महत्त्व है। नई शिक्षा नीति में 1 वर्षीय, 2 वर्षीय और 4 वर्षीय कोर्स का उल्लेख किया गया है। निः संदेह 4 वर्ष तक अध्ययन करने वाले लोग ज्यादा गहराई से सीख-समझ सकेंगे, लेकिन हम यह प्रयास कर सकते हैं की तीनो ही प्रकार के कोर्स में कुछ न्यूनतम साझा विषयवस्तु,परिप्रेक्ष्य और शिक्षण विधियों की बात की जा सके। बुनियादी भाषा और गणित से जुडी चुनौतियों और उनपर काम करने के तरीकों, बाल मनोविज्ञान की समझ और सतत आकलन के तौर-तरीकों पर कुछ महत्त्वपूर्ण बातें तीनो ही तरह के पाठ्यक्रमों मेंकी जानी चाहिए।

वर्तमान व्यवस्था में शिक्षक तैयार करने का काम अधिकांशतः निजी कालेज कर रहे हैं। इन निजी संस्थाओं को दक्षता अर्जित करने तथा सरकार द्वारा निर्धारित गुणवत्ता मानकों की पालना करने में सहयोग देना होगा। शिक्षा की गुणवत्ता तय करने के लिए नए तरीके से मापदंड सोचना होगा।

- शिक्षकों को तैयार करने के लिए सरकार ज्यादा से ज्यादा सरकारी कालेज खोले या पहले से चल रहे कालेजों में सीटों की संख्या बढाई जाए।
- डाईट तथा बीएड कालेजों में जारी कोर्स का नवीनीकरण हो और वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकता के अनुरूप इसे बनाया जाए।
- निजी कालेजों के लिए नए मापदंड बनाये जाएँ तथा सरकार द्वारा तय नियमों की पालना सुनिश्चित की जाए। ऐसे महाविद्यालय जो इस दिशा में बहुत ही सकारात्मक पहल कर रहे हैं उनके अनुभवों को लेकर प्रचार-प्रसार किया जाए। साथ ही इन्हें प्रोत्साहित किया जाए।
- महिला अभ्यर्थियों के लिए नियमो को लचीला बनाया जाये। अपने जिले में रहकर अध्ययन करने की संभावनाओं को बढाया जाए।
- कुछ प्रक्रियाओं द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि शिक्षक / शिक्षिका बनने के लिए ऐसे ही लोगों का चुनाव किया जाए जो सच में शिक्षक बनना चाहते हैं।
- अध्ययन के दौरान ही ज्यादा से ज्यादा स्कूल में रहकर बच्चों, शिक्षकों और समुदाय के बीच काम करते हुए सीखने के अवसर बनाए जाए। सिद्धांत और व्यवहार में जो अंतर्संबंध है उसे शिक्षक-शिक्षिका समझ सकें।
- शिक्षक शिक्षा से जुड़े संस्थानों में काम कर रहे लोगों की सतत क्षमता संवर्धन के लिए योजनायें बनाई जाए।
- सरकार की जो इकाइयां इस काम में सहयोग दे रही हैं उनके पास संसाधन की कमी न रहे अतः यहाँ उचित बजट आवंटित किया जाए।

6.1 शिक्षकों की तैयारी में क्या रोकना होगा?

- शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में विद्यार्थियों की नियमितता का ना होना। इस सम्बन्ध मेंनियमों का ना होना।
- इंटर्नशिप के लिये आने वाले छात्रों का परिवीक्षण विद्यालय तथा महाविद्यालय के शिक्षक के बीच सतत संवाद की प्रक्रिया का स्थापित नहीं होना। जिम्मेदारी का परिभाषित ना होना।
- पारंपरिक शिक्षण प्रक्रिया की प्रासंगिकता को समझे बिना निरंतर उपयोग में लाना।
- नवाचारों की कमी होना।
- पाठ्यक्रम को अनावश्यक देना।

6.2 शिक्षकों की तैयारी में बदलाव

- शिक्षकों को संवैधानिक मूल्यों के महत्त्व को समझने और इनकी पालना करने के लिए तैयार करना होगा।
- प्रशिक्षण विधियों में सहभागिता, सामुदायिक सहयोग एवं नई तकनीकी को शामिल करने की जरूरत है।
- प्रशिक्षण में नैतिक मूल्यों की भावना और स्व अनुसाशन के लिए प्रेरित किया जाए।
- महाविद्यालय में आने पर उनके विषयगत ज्ञान और पेडागोजी की समझ को और पक्का करना होगा
- विषयवस्तु को गुणात्मक और अंतर-अनुशासनात्मक रूप में प्रस्तुत करना होगा।
- शिक्षकों के साथ कौशल आधारित शिक्षा और उनके परिप्रेक्ष्य निर्माण पर काम करना होगा।
- फील्ड प्रक्टिस को व्यवहारिक बनाना होगा तथा कक्षा कक्ष शिक्षण से स्पष्ट जुड़ाव बनाना होगा।
- समावेशन की प्रक्रिया और मुद्दों से परिचित कराया जाए।

7. सेवा कालीन प्रशिक्षण

एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर लगातार काम करने की आवश्यकता है। साल में एक या दो बार सभी शिक्षकों का प्रशिक्षण एक साथ करने के तरीकों से आगे जाने के रास्ते खोजने होंगे। शिक्षक शिक्षा को पारंपरिक नजरिए से परे हट कर देखना होगा। शिक्षकों की चुनौतियों की पहचान की जाए तथा उनकी ज़रुरत के अनुसार Need Based Trainning की जानी चाहिए। यह चुनौतियाँ विषयवस्तु की समझ (content), शिक्षण विधि (Pedagogy) की समझ, शिक्षा का दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य (perspective), कला एवं सौन्दर्यबोध (Art and Asthetics) के साथ ही शैक्षणिक प्रबंधन (Academic Leadership) के मुद्दों से सम्बंधित हो सकती हैं। प्रशिक्षण में शिक्षकों की वास्तविक जरूरतों व उपरोक्त इंगित विषय क्षेत्रों को आधार बनाकर काम करना होगा।

- साल में एक दो बार का प्रशिक्षण बहुत असरदार नहीं होता है। अतः छोटे छोटे समूहों में नियमित रूप से आपस में मिलजुल कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया शुरू करनी होंगी।
- एक पंचायत या फिर किसी क्लस्टर (दो-तीन पंचायतों का समूह) पर स्थित स्कूल कॉम्प्लेक्स में ही एक उन्नत और संसाधनों से युक्त शैक्षिक सन्दर्भ केंद्र होना चाहिए।
- पंचायत स्तर पर ही शिक्षकों के need based समूहों की पाक्षिक या मासिक शैक्षिक बैठक आयोजित की जानी चाहिए। आपस में मिलकर परस्पर सीखने के अवसर बढाए जाएँ।
- प्रत्येक पंचायत से mentor teacher चिन्हित किये जायें जो उसी स्कूल या संकुल से भी हो सकते हैं और उन्हें प्रशिक्षित किया जाए। इन्ही mentor teachers के सहयोग से शिक्षकों को सतत अकादमिक सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान किया जाए। प्रशिक्षण एक तरफ़ा न रहे बल्कि सभी आपस में मिलकर एक दूसरे के अनुभवों से सीखें समझे इस तरह की प्रक्रियाएं बनाई जाए।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण को सतत रूप से देखने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया को छोटे छोटे हिस्सों में संयोजित किया जा सकता है। जैसे -
  - **क**. समय समय पर विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण किया जाए (20%)
  - **ख**. अपने साथियों, वरिष्ठ व अनुभवी अध्यापकों से विचार विमर्श, कक्षा अवलोकन व सुझाव, एक दूसरे की मदद व मार्गदर्शन, शिक्षकों के लर्निंग सर्कल व मेंटोरींग के माध्यम से नियोजित हो (30%)
  - **ग**. स्वाध्याय, परियोजना, एक्शन रिसर्च आदि पर आधारित सीखना (50%)

7.1 प्रशिक्षण के बाद जुड़ाव व फॉलोअप

प्रशिक्षण अपने आप में पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को प्रतिदिन काम करते हुए सहयोग और संबलन की आवश्यकता है। इस काम में उनके अधिकारी और साथी शिक्षक सहयोग करें। मेंटर टीचर के विचार को लेकर फालोअप कार्यक्रम तैयार किया जाए। प्रशिक्षण से प्राप्त समझ को कक्षा में लागू करते समय जो चुनौतियां आती है उन पर लगातार सहयोग दिया जाए। नई शिक्षण विधियों को कक्षा कक्ष में ले जाने के लिए

सहायक सामग्री प्रदान की जाए। इस सामग्री की उपयोगिता के तरीके भी समझाए जाए। शिक्षक एक पेशेवर अधिगम समुदाय से (Professional learning community) सम्बन्ध रखता है जिसमे उसकी स्वयं की रूचि भी होती है। यह रूचि जागृत भी की जा सकती है। शिक्षकों, हेड शिक्षकों, टीचर एजुकेटर, सुपरवायजर, यह सभी बच्चों के शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं। इन्हें लगातार नई चीज़ें सीखते रहने की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति निम्न प्रकार से की जा सकती हैं -।

- शिक्षकों के अलग-अलग आवश्यकता समूहों के अनुरूप लर्निंग कम्युनिटी बनाई जाए। यह संभव हो की कुछ ख़ास रुचियों वाले लोग एक से अधिक समूहों का हिस्सा बन जायें।
- प्रत्येक पंचायत में स्कूल कोम्प्लेक्स की कल्पना की गई है, यहाँ पुस्तकालय और वाचनालय होना चाहिए। यहाँ शिक्षक और समुदाय के लोग पढ़ें और महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करें।
- पंचायत शिक्षा अधिकारी प्रति माह, बैठक का आयोजन करें, जहां शिक्षक आपस में मिलकर सीखें समझें।
- गाँव व समुदाय के लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए छुट्टी के दिन या शाम के समय मीटिंग आयोजित की जाए।
- कम्युनिटी को व्यापक सन्दर्भों में देख जाए तो इसमें शिक्षक, जन प्रतिनिधि, बड़ी कक्षाओं में पढने वाले छात्र-छात्रा और उनके अभिभावक आदि भी शामिल होना चाहिए।
- इस समूह में शिक्षा, समाज और समुदाय विकास जैसे अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श होना चाहिए। इस तरह की बैठक पाक्षिक या मासिक की जानी चाहिए।

8. सेवारत व् सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा में उच्च शिक्षण संस्थाओं RSCERT, IASE और DIET की भूमिका-

(1) RSCERT (राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान) की भूमिका

- मॉड्यूल, TLM और प्रशिक्षण आयोजित करना
- सन्दर्भ सदस्यों की चयन प्रक्रिया
- अकादमिक संबलन की प्रक्रिया को नेतृत्व प्रदान करें।
- पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक निर्माण
- कार्यपुस्तिका और आकलन प्रपत्र तैयार करना
- राज्य स्तरीय सेमिनार और वार्ता आयोजित करना।
- सरकार द्वारा प्रस्तावित योजनाओं को राज्य में लागू करना।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकता के अनुसार योजनाएं लाना तथा उन्हें लागू करना।
- राज्य स्तरीय शोध और अध्ययन करना तथा मुख्य निष्कर्षों को राज्य के शिक्षकों तक पहुंचाना।

(2) DIET (जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान) की भूमिका

- शिक्षक शिक्षा के कोर्स चलाये। प्रतिवर्ष कम से कम 100 सीटों पर माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों को तैयार करें।
- स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सामग्री निर्माण करें तथा उसकी उपयोगिता।
- जिला स्तर पर शोध अध्ययन आयोजित करें तथा इसके प्रस्तुतीकरण के लिए सेमिनार आयोजित करें तथा उन्हें और प्रभावशाली बनाए।
- नोडल विद्यालयों को अकादमिक संबलन प्रदान करें। जिला स्तर पर एक सन्दर्भ केंद्र बनाये।
- प्रयोगशाला विद्यालयों के माध्यम से नवाचारों को बढ़ाएं और उन्हें जिले के सभी विद्यालयों तक पहुंचाए।
- शिक्षकों की प्रशिक्षण जरूरतों को समझने के लिए आवश्यकता आकलन का आयोजन कर, जिला केन्द्रित प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाये और शिक्षकों को प्रशिक्षित करें।
- स्कूल, संकुल, खंड और जिला स्तर पर संदर्भ व्यक्तियों के माध्यम से सतत अकादमिक संबल प्रदान करें।
- शिक्षकों को अपने स्तर पर क्रियात्मक अनुसंधान (Live action project) के चयन और उसे पूरा करने में परामर्श उपलब्ध कराये।

(3) IASE (उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान) की भूमिका

नयी शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने में उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान भूमिका भी महत्वपूर्ण है। एक तो ये शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रदान करते हैं और कक्षा 11 से 12 तक के व्याख्याताओं के सेवारत प्रशिक्षण के के लिए भी उत्तरदायी हैं। इनसे निम्नलिखित अपेक्षाएं हैं-

- ये अपने सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों को नयी शिक्षा नीति 2020 के अनुसार संशोधित करे।
- SCERT की सलाह से सेवारत शिक्षक शिक्षा की योजना बनाये।

- डाइट के सहयोग से अपने संभाग के कक्षा 11 से 12 तक के सभी शिक्षकों की जरुरत को पहचान कर प्रशिक्षणों का आयोजन करे।
- शिक्षकों को नवाचार करने के लिए प्रेरित करना एवं उनको परामर्श उपलब्ध कराये।
- संभाग में जो अच्छे अभ्यास (Best practices) हो रहे हैं,उनको संकलित करके प्रकाशित करें।
- उच्च अध्ययन के लिए सामग्री निर्माण का काम करें।
- शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों और समन्वय स्थापित करें।
- महाविद्यालयों को दिशा और सुझाव प्रदान करें। इस सम्बन्ध में उन्मुखीकरण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।

9. संदर्भ

1. नई शिक्षा नीति ड्राफ्ट-2020
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. दस वर्षीय करिकुलम फ्रेमवर्क, 1975, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
4. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2000, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
5. सामाजिक अध्ययन में परेशान करने वाले सवाल (आलेख), हृदयकान्त दीवान, लर्निंग कर्व, मई-2011, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बैंगलोर
6. इतिहास क्यों पढ़ें? (आलेख);पीटर एन. स्टर्न, शिक्षा विमर्श, नवंबर-दिसंबर-2008, दिगंतर, जयपुर
7. शिक्षा और राष्ट्र विकास, कोठारी कमीशन-1964-66, नई दिल्ली